ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

# हिन्दी साहित्य के विकास में हरियाणा की भूमिका
# Haryana's Role in the Development of Hindi Literature

Paper Submission: 05/01/2021, Date of Acceptance: 15/01/2021, Date of Publication: 24/01/2021

**ऋषिपाल**
सह प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
बाबू अनन्त राम जनता महाविद्यालय, कौल, कैथल
हरियाणा, भारत

**सारांश**

भारत के समस्त राज्यों में हरियाणा राज्य का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक इस राज्य का इतिहास अविच्छिन्न रूप में विद्यमान है। अनेक ऐतिहासिक प्रसंगों के साथ इस प्रदेश की धरती पर भारत के उत्थान और पतन का इतिहास लिखा हुआ है। भगवान श्री कृष्ण ने इसकी पावन धरा पर ही गीता का संदेश दिया था। धर्मक्षेत्र–कुरुक्षेत्र की धरती पर ही महाभारत का युद्ध हुआ था। मौर्य व गुप्त साम्राज्य का हरियाणा प्रदेश हृदय स्थल रहा है। पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गौरी का निर्णायक युद्ध भी इसी राज्य के तरावड़ी क्षेत्र में हुआ था। पानीपत की धरती पर मुगलों एवं मराठों के अनेक युद्ध हुए। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में भी हरियाणा प्रदेश की अग्रणी एवं महती भूमिका रही है। बाणभट्ट की कादम्बरी, महाकवि सूरदास और हाली जैसे शायर की जन्मस्थली व कर्मस्थली होने का सौभाग्य भी हरियाणा प्रदेश की धरती को जाता है।

The state of Haryana is prominent amongst all the states of India. From Vedic period to modern period, the history of this state exists in a different form. The history of the rise and fall of India has been written on the land of this region with many historical references. Lord Krishna gave the message of Gita on this holy ground. The battle of Mahabharata took place on the land of Dharmakshetra-Kurukshetra. The state of Haryana has been the heartland of the Maurya and Gupta empires. The decisive battle of Prithviraj Chauhan and Muhammad Ghori also took place in the Taravadi region of this state. There were many wars between the Mughals and the Marathas on the land of Panipat. The state of Haryana has also played a leading and important role in the freedom struggle of India. The fortune of being the birthplace and workplace of poets like Kadambari, Mahakavi Surdas and Hali of Banabhatta also goes to the land of Haryana state.

**मुख्य शब्द :** हरियाणा, स्वतन्त्रता, हरियाणवी भाषा, हिन्दी साहित्य।
Haryana, Independence, Haryanvi Language, Hindi Literature.

**प्रस्तावना**

स्वतन्त्रता के पश्चात् हरियाणा हिन्दी भाषी राज्य के राजनीतिक रूप में 01 नवम्बर सन् 1966 को अस्तित्व में आया। यहाँ के लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा को हरियाणवी भाषा कहा जाता है। अनेक विद्वानों ने हरियाणवी भाषा को अलग–अलग नामों से अभिहीत किया है, जैसे बांगरू, कौरवी, खड़ी बोली, जाटू, दक्षिणी हिन्दी विशेष नाम प्रमुख हैं।[1] हरियाणवी भाषा को लेकर डॉ. उषालाल के मतानुसार, ''हरियाणा प्रदेश की प्रमुख बोली हरियाणवी है, जिसे 'हरियाणी', 'हरियानी', 'हरियाणाई', 'बांगरू' और 'जाटू' आदि नामों से पुकारा जाता है।''[2] इसी प्रकार डॉ. नानकचंद शर्मा ने हरियाणवी को पश्चिमी हिन्दी की प्रमुख उपभाषा माना है। वे मानते हैं कि इसे लगभग 'बांगरू' या 'बांगडू' के नाम से अभिहीत किया जाता है। संभवतः इसके लिए उन्होंने ग्रियर्सन के लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया को आधार माना है।[3] 'हरियाणवी' शब्द हरियाणा प्रदेश के निवासियों तथा उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा के लिए प्रयुक्त होता है, जिसकी निष्पत्ति 'हरियाणा' के साथ 'वी' प्रत्यय जोड़ने से हुई है। हरियाणवी भाषा हरियाणा के जनसामान्य की भाषा है, इसलिए हरियाणा की भाषा का कोई नाम प्रदेश के आधार पर रखा जाए तो 'हरियाणवी' रखा जा सकता है। लेकिन वर्तमान में 'हरियाणवी' नाम से मात्र रोहतक और उसके नजदीक की भाषा का ही बोध होता है।[4] डॉ. रामकुमार भारद्वाज मानते हैं कि ''भाषा वैज्ञानिकों तथा

समीक्षकों ने 'हरियाणवी' के संदर्भ में 'हरियाणी', 'बांगरू', 'जाटू', 'कौरवी', 'बांगड़ी', 'सरहदी' आदि नामों का उल्लेख किया है। लेकिन उपरोक्त समस्त नाम 'हरियाणा' राज्य बनने से पहले के हैं।[5] आधुनिक एवं नवीनतम स्थिति में ये सभी नाम सीमित अर्थों का ही बोध कराते हैं।[6] डॉ. जगदेव सिंह ने इसे 'बांगरू' कह कर ही इसका संरचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।[7] पं. स्थाणुदत्त शास्त्री[8] और रामकुमार भारद्वाज[9] ने ग्रियर्सन के मत का खण्डन किया है और उनके द्वारा प्रस्तुत नामकरण को अवैज्ञानिक, तर्कहीन तथा अल्पबौद्धिक माना है। हरियाणवी भाषा को लेकर कौरवी, खड़ी बोली और हरियाणवी की स्थिति भी अनेक विद्वानों ने अपने–अपने विचारों से अभिव्यक्त की है – प्रथम कौरवी और खड़ी बोली एक ही भाषा के दो नाम हैं। दूसरा – कौरवी और खड़ी बोली का क्षेत्र विस्तार भी वही है जो हरियाणवी का है। तीसरा – हरियाणवी से ही हिन्दी का विकास हुआ है।[10]

**अध्ययन का उद्देश्य**

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य हिन्दी साहित्य के विकास में हरियाणा की भूमिका का अध्ययन करना है।

**विषय विस्तार**

भले ही वासुदेव शरण अग्रवाल[11] तथा डॉ. नरेश मिश्र[12] के मतानुसार कौरवी और खड़ी बोली में काफी समानता है, फिर भी हम यह नहीं मान सकते कि हरियाणवी से ही हिन्दी का विकास हुआ है, जबकि हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक स्त्रोत के आधार पर अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि अपभ्रंश की शौरसेनी, अर्ध मगधी और खस शाखाओं से हिन्दी का विकास विविध क्षेत्रों में हुआ है।[13] उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम तो कह सकते हैं कि हरियाणवी हिन्दी की एक प्रमुख बोली है, लेकिन दूसरे प्रान्तों जैसे गुजरात की गुजराती, पंजाब की पंजाबी और बंगाल की बंगाली के समान हरियाणा प्रान्त की भाषा को हरियाणवी भाषा कहना सही लगता है। डॉ. सुरेश गौतम के अनुसार इसे पश्चिमी हिन्दी की एक उपभाषा के रूप में प्रयोग करना ही उचित है।[14]

राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में 'हरियाणवी' भाषा का व हरियाणा प्रदेश का ऐतिहासिक एवं प्रमुख स्थान है। हरियाणा में पूर्व से ही हिन्दी साहित्य का सृजन होता रहा है। हिन्दी गद्य निबन्ध विधा के रचनाकारों में माधव प्रसाद मिश्र का स्थान प्रमुख रहा है। वे भारतीय संस्कृति के प्रशंसक एवं उपासक साहित्यकार थे। इसी प्रकार हिन्दी पत्रकारिता के पुरोधा बालमुकुन्द गुप्त हिन्दी के व्यापक और सर्वमान्य होने के पक्षपाती थे। उनका मानना था कि ''हमारे लिए वही हिन्दी अधिक उपकारी है जिसे हिन्दी वाले तो समझ ही सकें, उनके सिवाय उन प्रान्तों के लोग भी उसे कुछ न कुछ समझ सकें, जिनमें वह नहीं बोली जाती।''[15] बालमुकुन्द गुप्त न केवल हिन्दी साहित्य में भाषा शिल्पी थे, बल्कि सशक्त साहित्यकार भी थे। उनकी लेखन शैली में जिन्दादिली और मौलिकता व्याप्त थी। इसी के साथ–साथ हरियाणा के उपन्यासकारों व उपन्यासों की जब हम बात करते हैं तो हरियाणा के लेखकों ने कथा साहित्य में भी अभूतपूर्व योगदान दिया है, जैसे कृष्णलाल वर्मा का 'चम्पा' उपन्यास एवं किशोरी लाल का 'कश्मीर यात्रा' का उपन्यास विशेष उल्लेखनीय है। इस श्रेणी के प्रमुख लेखकों में खुशीराम वशिष्ठ, अमृतलाल मदान, राकेश वत्स, स्वदेश दीपक, घमंडीलाल अग्रवाल, रोहिणी अग्रवाल आदि के नाम बड़े सम्मान से लिए जा सकते हैं।

हिन्दी साहित्य में विशेष योगदान के लिए हरियाणा के प्रथम राज्यकवि हिन्दी सतसई के प्रवर्तक एवं हिन्दी वृत काव्य–लेखन के प्रस्तोता उदयभानु हंस को कौन नहीं जानता। वे न केवल समकालीन हिन्दी कविता के एक हीरक हस्ताक्षर हैं बल्कि 'सहज–कविता' आन्दोलन के पुरोधा, कवि और आचार्य विश्रुत लेखक भी हैं। डॉ. शशिभूषण सिंहल को हम कथा साहित्य के सृजन, शोध और समीक्षा के विद्वान के रूप में जानते हैं। हरियाणा के सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा द्वारा रचित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' साहित्येतिहास–चिंतन और लेखन को एक सर्वथा मौलिक और अनुपम दृष्टि प्रदान करता है। सुप्रसिद्ध रचनाकार डॉ. कँवलनयन कपूर ने हिन्दी कविता के रंगपाठ की परिकल्पना, सैद्धान्तिकी, प्रदर्शन और प्रयोग को हिन्दी जगत से परिचित करवा कर राष्ट्रीय स्तर पर अनुपम एवं प्रशंसनीय कार्य किया है। सामाजिक प्रतिबद्धता से प्रारम्भ करके अध्यात्म के संदर्भों, रहस्यों और आयामों को उद्घाटित करने में भी कँवलनयन कपूर की महती भूमिका है। इसी प्रकार गद्य साहित्य को ठोस आधारभूमि प्रदान करने में मोहन चोपड़ा का अद्वितीय स्थान है।

हरियाणा की साहित्यिक विभूति 'लीलाधर वियोगी' से कौन अनभिज्ञ है। साहित्य संसार में पुराणों व उपपुराणों को सबसे पहले हिन्दी में प्रस्तुत करके उन्होंने विशेष स्थान प्राप्त किया है। 'वियोगी' जी ने आठ खण्ड काव्यों की रचना करके प्रथम हिन्दी साहित्यकार की पहचान बनाई है। साहित्य के क्षेत्र में उनकी लेखनी अद्यतन सतत गतिशील है। हरियाणा की धरती पर आधुनिक भाषा विज्ञान और भाषा विश्लेषण की पद्धति पर बहुत से ग्रन्थों के रचनाकार डॉ. नरेश मिश्र सृजक रचनाकार एवं शब्द मर्मज्ञ और भाषाविद् के रूप में जाने जाते हैं। डॉ. रामनिवास 'मानव' हरियाणा के समकालीन सृजनात्मक हिन्दी साहित्य के अधिकारी विद्वान हैं। उन्होंने लघुकथा में समाचार शैली के प्रवर्तक की भूमिका का सफल निर्वहन किया है। उनका दोहा, बालगीत तथा लघु–विधाओं में अपूर्व योगदान रहा है। सफल कवि माधव कौशिक ने कविता की प्रत्येक विधा में सफलता पूर्वक पहचान बनाई है। उन्होंने आम बोलचाल की भाषा में, हिन्दी गज़ल को नयी कलात्मक पहचान प्रदान की है।

हिन्दी महाकाव्यकारों की परम्परा को आगे हरियाणा में बढ़ाते हुए तुलसीराम शर्मा 'दिनेश', भारतभूषण 'सांघीवाल', लीलाधर 'वियोगी', अमृतलाल 'मदान', सारस्वत मोहन 'मनीषी', राणा प्रताप गन्नौरी, धर्मचन्द विद्यालंकार और निरंजन सिंह योगमणि ने एक–एक तथा उदयभानु हंस ने दो–दो महाकाव्यों का सफल सृजन किया है। इतना ही नहीं हरियाणा में 'सतसई–संज्ञक' परम्परा का भी प्रचुर प्रचलन है। सारस्वत मोहन 'मनीषी' की पाँच सतसइयां प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके साथ ही रक्षा शर्मा 'कमल', महेन्द्र शर्मा 'सूर्य', उदयभानु हंस तथा

हरिसिंह शास्त्री की एक–एक सतसई यहां–वहां अपनी चमक बिखेर रही है।

**निष्कर्ष**

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि हरियाणा में समकालीन हिन्दी कविता, दोहा साहित्य, नवगीत, हिन्दी गज़ल, लम्बी कविता, नाटय–काव्य, खण्ड–काव्य, महाकाव्य, लघुकथा, कहानी, उपन्यास, एकांकी, नाटक, निबंध, आलोचना, पत्रकारिता, बाल–साहित्य, विज्ञान–साहित्य, लोक–साहित्य आदि विधाओं के द्वारा हिन्दी की विकास–यात्रा अपनी गुणवत्ता के साथ आगे बढ़ रही है।

**संन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *डॉ. पूर्णचन्द शर्मा, हरियाणवी और उसकी बोलियों का अध्ययन, पृ. 1*
2. *सं. डॉ. लालचन्द गुप्त 'मंगल', हरियाणा का लोक साहित्य, पृ. 19*
3. *डॉ. नानकचन्द शर्मा, हरियाणा भाषा का उद्‌गम और विकास, पृ. 1*
4. *सं. डॉ. साधुराम शारदा, हरियाणा : एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ. 164*
5. *रघुवीर सिंह मथाना, हरियाणा साहित्य का इतिहास, पृ. 10*
6. *डा. रामकुमार भारद्वाज, आध्यात्मिकता और हरियाणवी संस्कृति बोध, पृ. 32*
7. *वही, पृ. 32*
8. *पं. स्थाणुदत्त शास्त्री, हरियाणा : एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ. 164*
9. *डॉ. रामकुमार भारद्वाज, आध्यात्मिकता और हरियाणवी संस्कृति बोध, पृ. 33*
10. *रघुवीर सिंह मथाना, हरियाणा साहित्य का इतिहास, पृ. 12*
11. *डॉ. पूर्णचन्द शर्मा, हरियाणवी और उसकी बोलियों का अध्ययन, पृ. 97*
12. *डॉ. नरेश मिश्र, भाषा विज्ञान और मानक हिन्दी, पृ. 111*
13. *वही, पृ. 110*
14. *सं. डॉ. सुरेश गौतम, भारतीय साहित्य कोश, पृ. 156*
15. *डॉ. रणजीत सिंह, हरियाणा : एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ. 204*